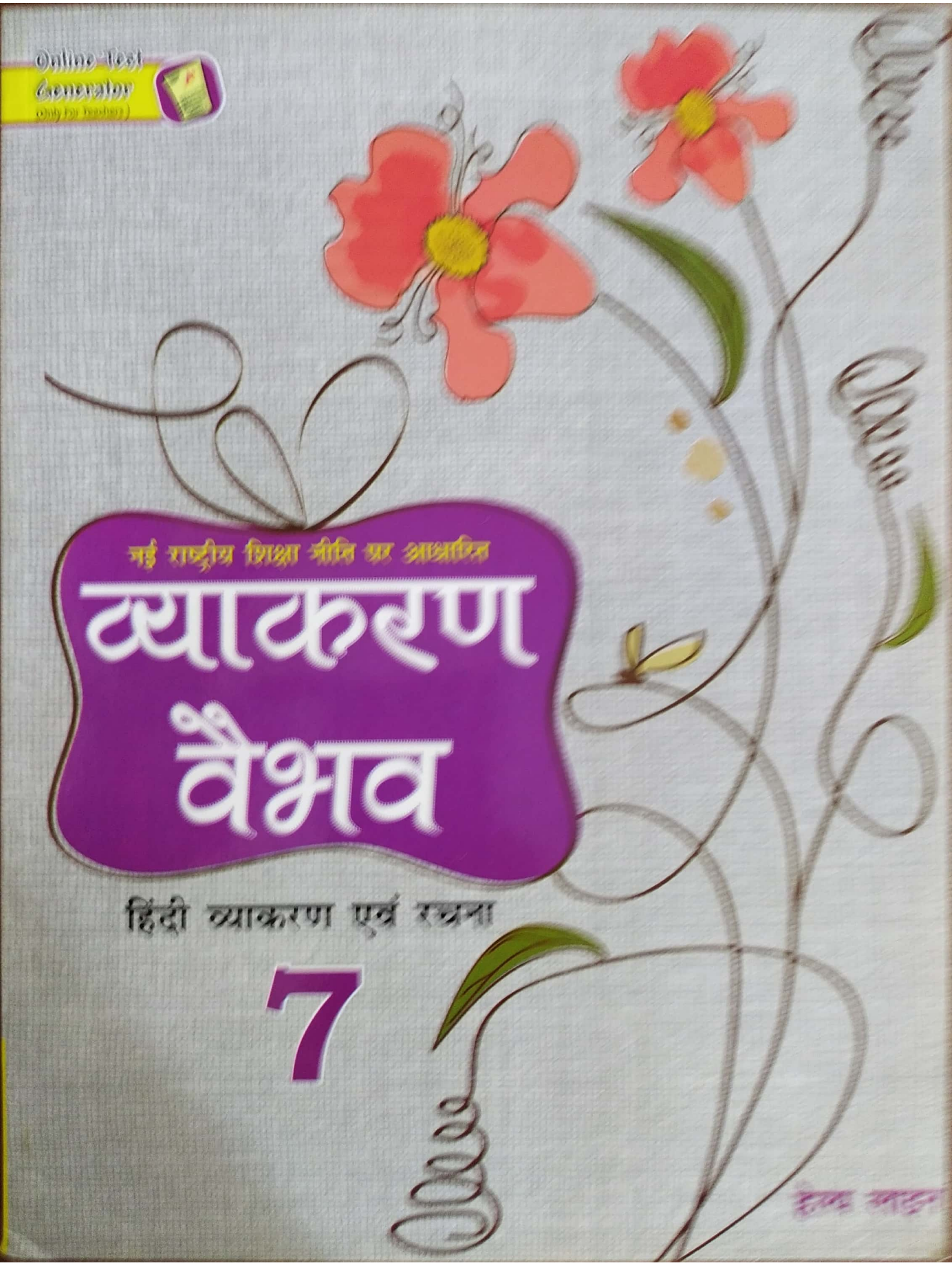

Online Test Generator
(Only for Teachers)

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर आधारित

व्याकरण वैभव

हिंदी व्याकरण एवं रचना

7

Scanned with CamScanner

1 भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण

Language, Dialect, Script and Grammar

बच्चो! मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अपने मन के भावों एवं विचारों को अनेक रूपों में अभिव्यक्त करता है। बोलकर, लिखकर तथा संकेतों द्वारा मन के भावों और विचारों को दूसरों के सामने प्रकट करता है। आदिमानव अपने मन के भाव समझाने और समझने के लिए संकेतों का सहारा लेता था, परंतु संकेतों के माध्यम से पूरी बात समझाना या समझ पाना बहुत कठिन था। आपने अपने मित्रों के साथ संकेतों में बात समझाने वाले खेल (dumb show) खेले होंगे। उस समय आपको अपनी बात समझाने में बहुत कठिनाई हुई होगी। ऐसा ही आदिमानव के साथ होता था। इस असुविधा को दूर करने करने के लिए उसने अपने मुख से निकली ध्वनियों को मिलाकर शब्द बनाने आरंभ किए, फिर शब्दों के मेल से बनी– भाषा।

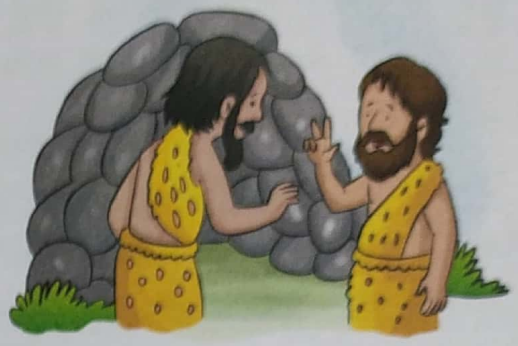

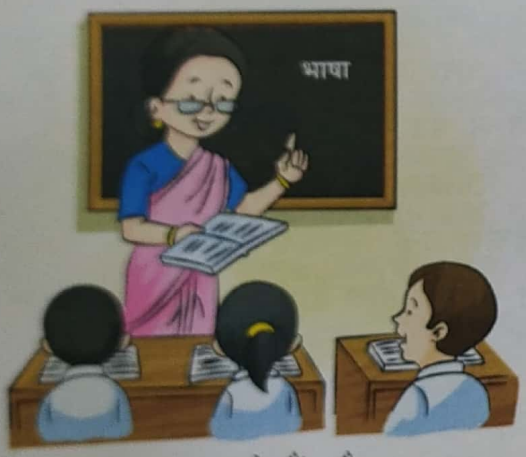

'भाषा' शब्द संस्कृत की **'भाष्'** धातु से बना है, जिसका अर्थ है– 'बोलना'। भाषा मानव के मुख से निकलीं वे सार्थक ध्वनियाँ हैं जो दूसरों तक अपनी बात स्पष्ट रूप से पहुँचाने का काम करती हैं। कक्षा में अध्यापक अपनी बात **बोलकर** समझाते हैं और छात्र **सुनकर** उनकी बात समझते हैं। बच्चा माता-पिता से **बोलकर** अपने मन की बात कहता है और वे उसकी बात **सुनकर** समझते हैं।

इसी प्रकार, छात्र भी अध्यापक द्वारा दिए गए गृहकार्य को **लिखकर** प्रकट करते हैं और अध्यापक उसे **पढ़कर** समझते हैं। ध्यान दें कि आरंभ में भाषा का सांकेतिक और मौखिक रूप था, किंतु, सभ्यता के विकास के साथ-साथ भाषा के लिखित रूप का भी प्रचलन हुआ और तब से यह निरंतर विकसित हो रहा है।

इस प्रकार–

भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर, सुनकर, लिखकर और पढ़कर अपने मन के भावों या विचारों का आदान-प्रदान करता है।

भाषा के रूप

भाषा के मुख्य दो रूप हैं–

1. मौखिक
2. लिखित

1. मौखिक भाषा : यह भाषा का मूल रूप है। जब हम अपने मन के भावों और विचारों को **बोलकर** प्रकट

Scanned with CamScanner

करते हैं, तो उसे भाषा का **मौखिक रूप** कहते हैं; जैसे– कक्षा में अध्यापिका **बोलकर** छात्रों को पाठ समझाती हैं और छात्र **सुनकर** उनके द्वारा समझाए गए पाठ को समझते हैं। दो व्यक्तियों का फ़ोन पर बात करना भी मौखिक भाषा का ही रूप है। मौखिक भाषा स्थायी नहीं होती, परंतु आजकल इलैक्ट्रॉनिक यंत्रों द्वारा किसी विशेष वार्तालाप, भाषण, नाटक, परिचर्चा आदि को सी॰ डी॰ आदि में रिकॉर्ड करके स्थायी रूप प्रदान कर दिया जाता है। काश! पुराने समय में भी ऐसे यंत्र होते।

इस प्रकार–

भाषा का वह रूप जिसमें एक व्यक्ति बोलकर विचार प्रकट करता है और दूसरा व्यक्ति सुनकर समझता है, **मौखिक भाषा** कहलाती है।

2. **लिखित भाषा :** जब व्यक्ति दूर रहने वाले अपने मित्रों या संबंधियों को पत्र लिखकर, कविता या कहानी लिखकर अपने भावों और विचारों को व्यक्त करता है, तो वह भाषा के लिखित रूप का प्रयोग करता है। भाषा के इस रूप को पाठक पढ़कर समझता है; जैसे– कविता छात्रावास में रहती है। उसने पत्र लिखकर अपने दादा जी को अपनी कुशलता से अवगत कराया। दादा जी ने पत्र पढ़कर कविता का हाल-चाल जाना। यह भाषा का लिखित रूप है। इसमें एक व्यक्ति **लिखकर** विचार प्रकट करता है और दूसरा **पढ़कर** उन्हें समझता है। समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं, पुस्तकों, पोस्टरों आदि में भाषा का लिखित रूप ही होता है।

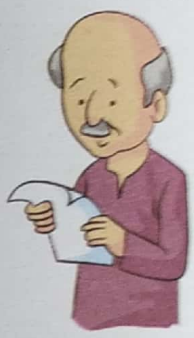

इस प्रकार–

भाषा का वह रूप जिसमें एक व्यक्ति अपने विचार या मन के भाव लिखकर प्रकट करता है और दूसरा व्यक्ति पढ़कर उसकी बात समझता है, **लिखित भाषा** कहलाती है।

❋ भाषा के लिखित रूप को संरक्षित करके रखा जा सकता है।

सांकेतिक भाषा : जब संकेतों (इशारों) द्वारा बात समझायी और समझी जाती है, तब वह **सांकेतिक भाषा** कहलाती है; जैसे– चौराहे पर यातायात नियंत्रित करता सिपाही संकेतों के माध्यम से गाड़ियों को रुकने और जाने का भाव प्रकट करता है। मूक-बधिर व्यक्ति भी इशारों या संकेतों से ही अपनी बातें दूसरों को समझाते हैं और दूसरों की बातें समझते हैं। पर इन इशारों या संकेतों के माध्यम से हम अपने मन के प्रत्येक भाव या विचार को न तो प्रकट कर सकते हैं और न ही दूसरे के संकेतों को देखकर उनके भाव पूरी तरह समझ सकते हैं।

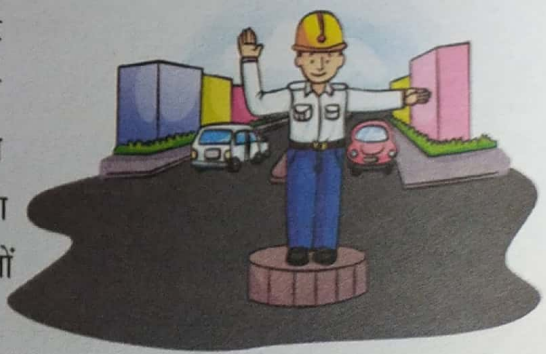

Scanned with CamScanner

मातृभाषा : 'मातृ + भाषा' अर्थात 'माँ द्वारा प्राप्त भाषा'। वह भाषा जिसे बच्चा अपनी माँ तथा परिवार से सीखता है, उसे **मातृभाषा** कहते हैं। जैसे यदि माँ पंजाबी बोलती हैं, तो बच्चे की मातृभाषा पंजाबी होगी। यदि परिवार द्वारा कश्मीरी बोली जाती है, तो बच्चे की मातृभाषा कश्मीरी होगी।

राजभाषा : वह भाषा जो देश के कार्यालयों और राजकीय कार्यों में प्रयोग की जाती है, **राजभाषा** कहलाती है; जैसे– भारत की राजभाषा हिंदी है। अमेरिका की राजभाषा अंग्रेजी है।

राष्ट्रभाषा : प्रत्येक राष्ट्र की अपनी राष्ट्रभाषा होती है; जैसे– जापान-जापानी, चीन-चीनी, फ्रांस-फ्राँसीसी, ब्रिटेन-अंग्रेजी आदि। 'राष्ट्र + भाषा' अर्थात् 'राष्ट्र की भाषा'। वह भाषा जिसका प्रयोग किसी देश के अधिकांश नागरिकों द्वारा किया जाता है, **राष्ट्रभाषा** कहलाती है। भारत में हिंदी का प्रयोग सत्तर प्रतिशत नागरिकों द्वारा किसी-न-किसी रूप में किया जाता है। अतः हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है। परंतु अभी हिंदी को संविधान द्वारा राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता नहीं मिल सकी है।

ध्यान दें– राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा में अंतर है, इसे एक न समझें। भारत में कार्यालयी काम-काज के लिए हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग किया जाता है। **14 सितंबर, 1949** को हिंदी को भारत की राजभाषा घोषित किया गया। इसलिए प्रतिवर्ष इस दिन **हिंदी दिवस** मनाया जाता है।

मानक भाषा : विद्वानों एवं शिक्षाविदों द्वारा भाषा में एकरूपता लाने के लिए भाषा के जिस रूप को मान्यता दी जाती है, वह **मानक भाषा** कहलाती है।

भाषा में एक ही वर्ण या शब्द के एक से अधिक रूप प्रचलित हो सकते हैं। ऐसे में उनके किसी एक रूप को विद्वानों द्वारा मानक रूप में मान्यता दे दी जाती है; जैसे–

शब्द	मानक रूप
गयी	गई
ठण्ड	ठंड
अ्र	अ
अन्त	अंत
शुद्ध	शुद्ध
सन्त	संत
दुःख	दुख
चाहिये	चाहिए

Scanned with CamScanner

भाषा के अंग

भाषा अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए ध्वनि, वर्ण, शब्द, वाक्य और लिपि का सहारा लेती है। ये भाषा के अंग हैं।

बोली

भाषा के क्षेत्रीय रूप को **बोली** कहते हैं। यह किसी क्षेत्र विशेष में ही वहाँ के निवासियों द्वारा मौखिक रूप से अपने विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम होती है। बोली का क्षेत्र सीमित होता है जबकि भाषा का क्षेत्र व्यापक होता है। हिंदी की प्रमुख बोलियाँ हैं– ब्रज, अवधी, भोजपुरी, हरियाणवी, गढ़वाली आदि।

किसी क्षेत्र विशेष में बोली जाने वाली भाषा **बोली** कहलाती है।

विशेष– जब किसी बोली में साहित्य की रचना होने लगती है, तो वह धीरे-धीरे भाषा का रूप धारण करने लगती है; जैसे– ब्रजभाषा।

लिपि

भाषा की मौखिक ध्वनियों को लिखकर प्रकट करने के लिए कुछ प्रतीक चिह्न निश्चित कर लिए गए हैं। इन प्रतीक-चिह्नों के व्यवस्थित समूह को ही **लिपि** कहते हैं। आइए, कुछ भाषाओं की लिपियाँ जानें–

हिंदी तथा संस्कृत की लिपि "देवनागरी" है।

अंग्रेजी की लिपि "रोमन" है।

पंजाबी की लिपि "गुरुमुखी" है।

उर्दू की लिपि "फ़ारसी" है।

भाषा की ध्वनियों को लिखने के ढंग को **लिपि** कहा जाता है।

व्याकरण

किसी भाषा के प्रयोग की नियमावली को **व्याकरण** कहते हैं।

"व्याकरण" का अर्थ है– विश्लेषण करना। व्याकरण भाषा के वर्णों, शब्दों, पदों और वाक्य-रचना के रूप को निश्चित करता है।

भाषा के मानक रूप को तय करने का काम भी व्याकरण ही करता है। व्याकरण हमें भाषा को सही रूप में बोलना, लिखना और पढ़ना-समझना सिखाता है।

उदाहरण–

1. गाय घास खाता है।

   (वाक्य अशुद्ध है क्योंकि कर्ता (स्त्रीलिंग) के अनुरूप क्रिया प्रयुक्त नहीं हुई है।)

2. गाय घास खाती है।

   (वाक्य शुद्ध है क्योंकि कर्ता स्त्रीलिंग है और उसके अनुरूप ही क्रिया प्रयुक्त हुई है।)

व्याकरण वह शास्त्र है जिसके द्वारा मनुष्य किसी भाषा को शुद्ध रूप में पढ़ना, लिखना एवं बोलना सीखता है।

Scanned with CamScanner

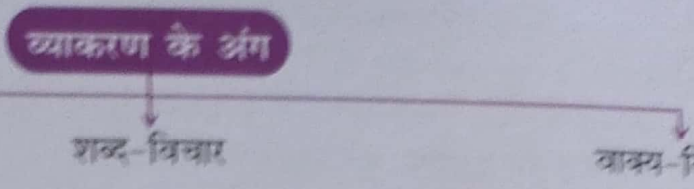

व्याकरण के अंग

वर्ण-विचार | शब्द-विचार | वाक्य-विचार

. **वर्ण-विचार** : इसके अंतर्गत वर्णों के आकार, प्रकार, उनके लिखने की विधि तथा उच्चारण आदि पर चार किया जाता है।

. **शब्द-विचार** : इसके अंतर्गत शब्दों के रूप, भेद, महत्व, उनकी उत्पत्ति-व्युत्पत्ति तथा बनावट आदि पर चार किया जाता है।

. **वाक्य-विचार** : इसके अंतर्गत वाक्यों की रचना, उनके भेद, उपभेद, उनके पारस्परिक संबंध, रूपांतरण, नकी शुद्धता-अशुद्धता तथा विराम-चिह्नों आदि पर विचार किया जाता है।

याकरण के उपर्युक्त भागों का हम अगले अध्यायों में विस्तार से अध्ययन करेंगे।

हमने जाना

1. भाषा हमारे मन के भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने का माध्यम है।
2. भाषा के दो रूप हैं– (क) मौखिक भाषा (ख) लिखित भाषा
3. बोलकर एवं सुनकर विचारों का आदान-प्रदान करना मौखिक भाषा कहलाता है।
4. लिखकर एवं पढ़कर विचारों का आदान-प्रदान करना लिखित भाषा कहलाता है।
5. भाषा का वह रूप जिसे बच्चा अपनी माता और परिवार के अन्य सदस्यों से ग्रहण करता है, मातृभाषा कहलाती है।
6. भाषा का विद्वानों और शिक्षाविदों द्वारा स्वीकृत रूप मानक भाषा कहलाता है।
7. भाषा के स्थानीय या क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं।
8. वर्णों या अक्षरों को लिखने के ढंग को लिपि कहा जाता है।
9. वह शास्त्र जिसके द्वारा मनुष्य किसी भाषा को शुद्ध रूप में पढ़ना, लिखना और बोलना सीखता है, व्याकरण कहलाता है।
10. व्याकरण के तीन प्रमुख अंग हैं–
    (क) वर्ण-विचार (ख) शब्द-विचार (ग) वाक्य-विचार

अभ्यास

मौखिक प्रश्न

1. दिए गए प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–
   (क) लिपि किसे कहते हैं?
   (ख) बोली किसे कहते हैं? हिंदी की किन्हीं तीन बोलियों के नाम बताइए।
   (ग) मातृभाषा से आप क्या समझते हैं?

Scanned with CamScanner

लिखित प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. दिए गए उत्तरों में से सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) हिंदी को भारत की राजभाषा कब घोषित किया गया?

14 सितंबर, 1946 | 14 सितंबर, 1947 | 14 सितंबर, 1949 | 14 सितंबर, 1943

(ख) बोली भाषा का कैसा रूप है?

विकसित | क्षेत्रीय | अल्पविकसित | इनमें से कोई नहीं

(ग) इनमें से किस धातु से 'भाषा' शब्द बना है–

भाषण | भाष्
भास | 'क' और 'ख' दोनों सही हैं।

(घ) बोली का क्षेत्र–

भाषा से व्यापक होता है। | भाषा की अपेक्षा सीमित होता है।
भाषा के बराबर होता है। | भाषा से दोगुना होता है।

(च) उर्दू की लिपि है–

देवनागरी | रोमन | गुरुमुखी | फ़ारसी

(छ) लिखित भाषा की आधारभूत इकाई है–

ध्वनि | वर्ण | शब्द | वाक्य

(ज) भाषा के शुद्ध रूप के ज्ञान के लिए जानना आवश्यक है–

वाक्य | लिपि | व्याकरण | शब्द

2. निम्नलिखित रचनाओं के रचनाकार और भाषा के नाम पता करके लिखिए–

रचना	रचनाकार	भाषा
(क) महाभारत	_____	_____
(ख) रामायण	_____	_____
(ग) सूरसागर	_____	_____
(घ) कुरुक्षेत्र	_____	_____
(ङ) रामचरितमानस	_____	_____
(च) साखी, दोहे	_____	_____
(छ) झाँसी की रानी	_____	_____

3. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए :

(क) बोली को किसी भी लिपि में लिखा जा सकता है।
(ख) व्याकरण भाषा के गलत रूप का ज्ञान कराता है।
(ग) सर्वप्रथम लिखित भाषा का उद्भव हुआ था।
(घ) हम भाषा के मौखिक रूप में बातें करते हैं।
(ङ) अंग्रेज़ी की लिपि देवनागरी है।

4. भाषा के कितने रूप होते हैं? उनके नाम लिखिए।

_____

_____

5. लिपि किसे कहते हैं? लिपि की आवश्यकता क्यों पड़ी?

Scanned with CamScanner

6. बोली से आप क्या समझते हैं? बोली और भाषा में क्या अंतर होता है? उदाहरण देकर समझाइए।

7. व्याकरण किसे कहते हैं? यदि व्याकरण न होता तो भाषा की स्थिति कैसी होती?

8. मौखिक एवं लिखित भाषा के पाँच-पाँच उदाहरण लिखिए–

मौखिक	लिखित
2.	1.
3.	2.
4.	3.
5.	4.
	5.

रचनात्मक क्रियाकलाप

- विश्व में बोली जाने वाली किन्हीं दस भाषाओं के नाम तथा लिपियों के नमूने इंटरनेट या पुस्तकालय से एकत्रित कीजिए और अपनी स्क्रैप बुक में चिपकाइए।
- अपनी पसंद के लेखकों एवं कवियों के जन्म, शिक्षा, व्यवसाय, साहित्य के क्षेत्र में इनके योगदान, रचनाएँ आदि के बारे में पुस्तकालय/इंटरनेट से जानकारी एकत्रित करके चार्ट पेपर पर चित्र सहित एक परियोजना तैयार कीजिए।
- किन्हीं पाँच भाषाओं में अपना नाम लिखिए।
- कुछ राज्यों की वेशभूषा एवं नृत्य-शैलियों में स्त्री-पुरुषों के चित्र इकट्ठे कीजिए और साथियों के साथ 'राज्य की भाषा बताओ' खेल खेलिए। संकेत देखिए।

Scanned with CamScanner

2 वर्ण विचार और उच्चारण

Orthography and Pronunciation

ध्वनि का सामान्य अर्थ आवाज होता है। मनुष्य के बोलने और बातचीत करने पर जो ध्वनियाँ निकलती हैं, उनके निश्चित अर्थ होते हैं। व्याकरण में ध्वनि का अर्थ वर्ण होता है।

निम्नलिखित वाक्य में प्रयुक्त शब्दों के वर्ण-विच्छेद पर ध्यान दीजिए–

महेश पुस्तक पढ़ता है। इस वाक्य में अनेक शब्द हैं। प्रत्येक शब्द वर्णों (ध्वनियों) से बना है–

महेश	–	म् + अ + ह् + ए + श् + अ
पुस्तक	–	प् + उ + स् + त् + अ + क् + अ
पढ़ता	–	प् + अ + ढ़् + अ + त् + आ
है	–	ह + ऐ

प्राप्त ध्वनियों के और टुकड़े नहीं किए जा सकते हैं। इस प्रकार

वर्ण वह ध्वनि है जिसके और खंड (टुकड़े) नहीं किए जा सकते।

किसी भाषा को सीखने के लिए सबसे पहले वर्णों यानी ध्वनियों को सीखा जाता है।

वर्णों की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं–

(क) वर्णों के टुकड़े नहीं किए जा सकते।

(ख) वर्ण उच्चरित ध्वनियों के लिखित रूप होते हैं।

(ग) वर्ण को 'अक्षर' भी कहा जाता है।

(घ) वर्णों के मेल से शब्द बनते हैं।

वर्णों का व्यवस्थित समूह वर्णमाला कहलाता है। वर्णमाला में स्वर और व्यंजन होते हैं।

स्वर

हिंदी में 11 स्वर हैं–

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ
ऋ	ए	ऐ	ओ	औ	

स्वरों के उच्चारण में एक समान समय नहीं लगता। कुछ में कम, कुछ में अधिक और कुछ में और भी अधिक समय लगता है।

उच्चारण में लगने वाले समय के आधार पर स्वरों को तीन भागों में बाँटा गया है–

1. ह्रस्व स्वर 2. दीर्घ स्वर 3. प्लुत स्वर

1. ह्रस्व स्वर : ह्रस्व का अर्थ होता है– लघु या छोटा। इन स्वरों के उच्चारण में **बहुत कम समय** लगता है। अ, इ, उ तथा ऋ ह्रस्व स्वर हैं। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं।

Scanned with CamScanner

2. दीर्घ स्वर : दीर्घ का अर्थ होता है– बड़ा। इन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों की तुलना में लगभग **दोगुना समय** लगता है। ये संख्या में सात हैं– **आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ** तथा **औ**।

3. प्लुत स्वर : किसी स्वर (विशेषकर 'ओ') को अत्यधिक खींचकर उच्चरित किया जाए, तो प्लुत स्वर बन जाता है। '३' का चिह्न प्लुत स्वर का चिह्न है। इन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से **तीन गुना समय** लगता है; जैसे– **ओ३म**, आ३, भैया३ आदि।

अनुस्वार, अनुनासिक और विसर्ग

अनुस्वार (ं) : पंचमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग किया जाता है। इसका उच्चारण नाक से होता है; जैसे– चंदन, कंघा, अंडा आदि।

अनुनासिक (ँ) : जब किसी स्वर का उच्चारण **मुँह और नाक** दोनों की सहायता से किया जाता है, तब वह ध्वनि अनुनासिक हो जाती है। इसका चिह्न (ँ) है। इसे **चंद्रबिंदु** भी कहते हैं; जैसे– गाँव, आँख।

विशेष– यदि अनुनासिक को शिरोरेखा के ऊपर मात्रा के साथ लगाना हो, तो अनुस्वार के रूप में प्रयोग करते हैं; जैसे– रातेँ = रातें सड़केँ = सड़कें

विसर्ग (:) : इसका प्रयोग तत्सम शब्दों में किया जाता है। इसका उच्चारण '**ह्**' के समान होता है; जैसे– प्रात:, अत:, स्वत: आदि।

स्वर तथा उनकी मात्राएँ

स्वर	अ	आ	ई	इ	उ	ऊ	ऋ	ऐ	ए	ओ	औ
मात्रा	नहीं होती	ा	ी	ि	ु	ू	ृ	ै	े	ो	ौ

व्यंजन

जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से किया जाता है, उन्हें **व्यंजन** कहते हैं।

प्रयोग करते समय इनका पूर्ण उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है। व्यवहार में 'क्' (अ रहित) को, 'आधा क' ही कहा जाता है।

इस प्रकार, स्वर वर्णमाला के प्राण हैं। हाँ, इतना ज़रूर है कि कोई '**अल्पप्राण**' है तो कोई '**महाप्राण**'।

व्यंजनों का वर्गीकरण

उच्चारण-स्थान के आधार पर व्यंजनों को तीन वर्गों में बाँटा गया है–

1. स्पर्श व्यंजन : इन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा मुख के विभिन्न भागों को स्पर्श करती है, इसी कारण ये स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं। वर्णमाला के पहले **पच्चीस व्यंजन** (कवर्ग से पवर्ग तक) इस श्रेणी में आते हैं। प्रत्येक वर्ग में पाँच व्यंजन हैं। इन्हें पाँच भागों में बाँटा गया है–

स्पर्श व्यंजन	**कवर्ग**	क	ख	ग	घ	ङ
	चवर्ग	च	छ	ज	झ	ञ
	टवर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण
	तवर्ग	त	थ	द	ध	न
	पवर्ग	प	फ	ब	भ	म

Scanned with CamScanner

2. अंतस्थ व्यंजन : इन वर्णों का उच्चारण **जीभ, तालु, दाँत** और **होंठों** को सटाने से होता है। इनके उच्चारण में श्वास का अवरोध बहुत ही कम होता है। इनका उच्चारण स्वरों और व्यंजनों के मध्य का होता है, इसलिए इन्हें अंतस्थ व्यंजन कहा जाता है। ये चार हैं– **य, र, ल, व।**

3. ऊष्म व्यंजन : इन व्यंजनों के उच्चारण में हवा मुख के विशेष भागों को स्पर्श करने के कारण गरम हो जाती है, इसलिए इन्हें ऊष्म व्यंजन कहा जाता है। ये संख्या में चार होते हैं– **श, ष, स, ह।**

नाद (स्वर-तंत्रियों में कंपन) की दृष्टि से वर्णों के भेद

उच्चारण करते समय स्वर तंत्रियों में होने वाले कंपन या गूँज के आधार पर वर्णों के दो भेद किए जाते हैं–

1. सघोष वर्ण 2. अघोष वर्ण

1. सघोष वर्ण : जिन वर्णों के उच्चारण में स्वर-तंत्रियों में कंपन पैदा होता है, उन्हें सघोष वर्ण कहते हैं। ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म, ड़, ढ़, य, र, ल, व, ह तथा सभी स्वर (ऑ सहित) सघोष वर्ण हैं। इनमें 12 स्वर वर्ण हैं तथा 22 व्यंजन हैं।

2. अघोष वर्ण : जिस वर्ण के उच्चारण में स्वर-तंत्रिका में कंपन उत्पन्न नहीं होता है, उसे अघोष वर्ण कहते हैं।

क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ, श, ष, स अघोष वर्ण हैं।

उच्चारण में वायु-प्रक्षेप (प्रयत्न) की दृष्टि से व्यंजन-भेद

उच्चारण के समय साँस अथवा वायु की मात्रा के आधार पर व्यंजनों को निम्नलिखित दो भागों में बाँटा गया है– 1. अल्पप्राण व्यंजन 2. महाप्राण व्यंजन।

1. अल्पप्राण व्यंजन : अल्प (थोड़ा) + प्राण (वायु) जिन व्यंजनों के उच्चारण में कम समय तथा कम वायु की आवश्यकता होती है, वे अल्पप्राण व्यंजन कहलाते हैं। ये निम्नलिखित हैं–

क, ग, ङ; च, ज, ञ; ट, ड, ण; त, द, न; प, ब, म; य, र, ल, व

2. महाप्राण व्यंजन : जिन वर्णों के उच्चारण में श्वास-वायु अधिक मात्रा में निकलती है, वे महाप्राण व्यंजन कहलाते हैं। ख, घ; छ, झ; ठ, ढ, ढ़; थ, ध; फ, भ; श, ष, स, ह हिंदी के महाप्राण व्यंजन हैं।

हलंत (्) : प्रत्येक व्यंजन में 'अ' स्वर समाया हुआ है। अ को अलग कर दें, तो

क – अ = क्। अ स्वर के अलग होते ही व्यंजन में 'हलंत चिह्न' लग जाता है।

संयुक्त व्यंजन : जब दो या दो से अधिक स्वर रहित व्यंजनों के मेल से एक नया व्यंजन बनता है, तो वह संयुक्त व्यंजन कहलाता है।

क् + ष् + अ = **क्ष** त् + र् + अ = **त्र**

ज् + ञ् + अ = **ज्ञ** श् + र् + अ = **श्र**

संयुक्त व्यंजन में पहला व्यंजन स्वर रहित होता है और दूसरा व्यंजन स्वर सहित होता है।

द्वित्व व्यंजन : जब कोई व्यंजन ध्वनि लगातार दो बार आ जाए, तो इस मेल से द्वित्व व्यंजन बनता है; जैसे– कुत्ता, पत्ता, हट्टा-कट्टा इत्यादि।

Scanned with CamScanner

उत्क्षिप्त ध्वनियाँ

हिंदी में कुछ अन्य ध्वनियाँ भी विकसित हो गई हैं। ऐसी ध्वनियों को उत्क्षिप्त ध्वनियाँ कहते हैं; जैसे–ड़, ढ़। ये दोनों क्रमशः ड और ढ से विकसित हुई हैं। उच्चारण के समय ड, ढ ध्वनियाँ शब्द के शुरू में तथा शब्द के बीच में संयुक्त व्यंजनों के रूप में आती हैं। शब्द के बीच या अंत में ये ड़, ढ़ में बदल जाती हैं; जैसे–

ड – डलिया, अड्डा

ढ – ढक्कन, गड्ढा

ड़ – मोड़, सड़क, पकड़ आदि।

ढ़ – गढ़, पढ़कर आदि।

विशेष– ड़, ढ़ शब्द के प्रारंभ में कभी नहीं आते।

आगत ध्वनियाँ

हिंदी में ऐसी ध्वनियाँ जो पहले प्रयोग में नहीं थीं, अरबी, फ़ारसी, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं के शब्दों के हिंदी में प्रचलित होने के कारण प्रयोग में आने लगी हैं। इन्हें आगत ध्वनियाँ कहते हैं।

क़, ख़, ग़, ज़, फ़, ऑ आदि आगत ध्वनियाँ हिंदी में प्रचलित हैं; जैसे– ताक़, मख़मल, बाग़, सज़ा, फ़न आदि। वर्तमान में क, ख, ग का हिंदीकरण हो चुका है जबकि ज़, फ़ अभी अपने मूल रूप में नुकता सहित प्रचलित हैं।

इसी प्रकार हिंदी में आगत स्वर का प्रयोग भी किया जाता है। 'ऑ' आगत स्वर है। यह अंग्रेज़ी भाषा से हिंदी में आया है।

डॉक्टर, कॉलेज, टॉफ़ी, हॉकी आदि आगत स्वर के उदाहरण हैं।

वर्ण-विच्छेद

किसी शब्द के वर्णों को अलग-अलग करके लिखना वर्ण-विच्छेद कहलाता है।

वर्ण-विच्छेद से वर्तनी तथा उच्चारण को समझने में सहायता मिलती है।

आइए, कुछ शब्दों का वर्ण-विच्छेद करें–

स्वतंत्रता – स् + व् + अ + त् + अं + त् + र् + अ + त् + आ

पाठशाला – प् + आ + ठ् + अ + श् + आ + ल् + आ

प्रेरणा – प् + र् + ए + र् + अ + ण् + आ

पुस्तक – प् + उ + स् + त् + अ + क् + अ

प्रकृति – प् + र् + अ + क् + ऋ + त् + इ

परीक्षा – प् + अ + र् + ई + क् + ष् + आ

होली – ह् + ओ + ल् + ई

उच्चारण

मुख से वर्णों को बोलना उच्चारण कहलाता है। मुख में सभी वर्णों के लिए उच्चारण स्थान होते हैं। यदि वर्णों का उच्चारण शुद्ध न किया जाए, तो लिखने में भी अशुद्धियाँ हो जाती हैं। हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है। इसे जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा भी जाता है।

Scanned with CamScanner

नीचे अशुद्ध उच्चारण के कारण सामान्य अशुद्धियों के कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं–

'अ' और 'आ' की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अहार	आहार	अज़ादी	आज़ादी
अगामी	आगामी	अवश्यक	आवश्यक
अत्याधिक	अत्यधिक	नराज़	नाराज़
आधीन	अधीन	अलोचना	आलोचना

'इ' और 'ई' की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
तिथी	तिथि	परिक्षा	परीक्षा
कवी	कवि	आइना	आईना
व्यक्ती	व्यक्ति	पत्नि	पत्नी
क्योंकी	क्योंकि	आरति	आरती
मूर्ती	मूर्ति	दिपावली	दीपावली

'उ' और 'ऊ' की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
समुह	समूह	गुरू	गुरु
प्रभू	प्रभु	पशू	पशु
वधु	वधू	हिंदु	हिंदू

'ए' और 'ऐ' की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
ऐसा	ऐसा	सैना	सेना
ऐकता	एकता	ऐकांत	एकांत
देनिक	दैनिक	मेत्री	मैत्री

Scanned with CamScanner

'ओ' और 'औ' की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
रौशनी	रोशनी	लौकिक	लौकिक
नोकर	नौकर	चौराहा	चौराहा
त्यौहार	त्योहार	पौधा	पौधा
भोगोलिक	भौगोलिक	सौम्य	सौम्य

'रि' और 'ऋ' की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
रितु	ऋतु	रिचा	ऋचा
रिण	ऋण	रिषभ	ऋषभ
अमरित	अमृत	नर्मी	नरमी

अनुस्वार (ं) और अनुनासिक (ँ) संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अंधेरा	अँधेरा	दांत	दाँत
ठँडा	ठंडा	सांप	साँप
हंसी	हँसी	महंगी	महँगी
कँघा	कंघा	मँजन	मंजन

हमने जाना

1. भाषा की वह मूल ध्वनि जिसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते, वर्ण कहलाती है।
2. वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहा जाता है।
3. उच्चारण के आधार पर वर्णों को दो भागों में बाँटा जा सकता है– (क) स्वर (ख) व्यंजन
4. स्वरों को निम्नलिखित तीन भागों में बाँटा जाता है–
   (क) ह्रस्व स्वर (ख) दीर्घ स्वर (ग) प्लुत स्वर
5. व्यंजनों को निम्नलिखित तीन वर्गों में बाँटा जाता है–
   (क) स्पर्श (ख) अंतस्थ (ग) ऊष्म
6. पहले स्वर रहित तथा दूसरे स्वर सहित व्यंजन के मेल को संयुक्त व्यंजन कहते हैं।
7. किसी शब्द में प्रयुक्त वर्णों को अलग-अलग करने को वर्ण-विच्छेद कहते हैं।

Scanned with CamScanner

अभ्यास

मौखिक प्रश्न

1. दिए गए प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) स्वर कितने प्रकार के होते हैं?

(ख) व्यंजनों के कितने वर्ग होते हैं? उनके नाम बताइए।

(ग) संयुक्त व्यंजन किसे कहते हैं?

लिखित प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) हिंदी में वर्णों की कुल संख्या होती है–

27 ○ 33 ○ 48 ○ 52 ○

(ख) निम्नलिखित स्वरों में ह्रस्व स्वर कौन-सा है?

आ ○ इ ○ ई ○ औ ○

(ग) श, ष, स, ह व्यंजन किसके अंतर्गत आते हैं–

स्पर्श व्यंजन ○ अंतस्थ व्यंजन ○ ऊष्म व्यंजन ○ ये सभी ○

(घ) हिंदी वर्णमाला को कितने भागों में विभाजित किया गया है–

दो ○ तीन ○ चार ○ पाँच ○

(ङ) इनमें से कौन-सा वर्ण ह्रस्व स्वर नहीं है–

अ ○ ऋ ○ ई ○ उ ○

(च) संयुक्त व्यंजन का–

पहला व्यंजन स्वर रहित होता है ○ दूसरा व्यंजन स्वर रहित होता है। ○

पहला व्यंजन स्वर सहित होता है ○ सभी सही हैं ○

(छ) इनमें से कौन-सी ध्वनि आगत नहीं है–

ऑ ○ ज़ ○ फ़ ○ च ○

(ज) जब किसी व्यंजन का उच्चारण करते समय हवा मुख में गरम हो जाती है, तो उस व्यंजन को कहते हैं–

द्वित्व व्यंजन ○ स्पर्श व्यंजन ○ ऊष्म व्यंजन ○ संयुक्त व्यंजन ○

2. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (×) का चिह्न लगाइए–

(क) वर्णमाला वर्णों के व्यवस्थित समूह का नाम है। ○

(ख) हिंदी वर्णमाला में स्वरों की संख्या 12 है। ○

(ग) व्यंजनों के उच्चारण में स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है। ○

(घ) स्वरों के चार भेद होते हैं। ○

(ङ) स्पर्श व्यंजनों की संख्या पच्चीस है। ○

3. नीचे दिए गए व्यंजन स्पर्श, अंतस्थ अथवा ऊष्म में से किस श्रेणी में आते हैं?

य, र, ल, व _____

क, ख, ग, घ, ङ _____

श, ष, स, ह _____

Scanned with CamScanner

4. **निर्देशानुसार उत्तर दीजिए–**

(क) 'ऑ' ध्वनि से बने दो शब्द लिखिए।

(ख) 'सज़ा', 'सजा' का अंतर वाक्य-प्रयोग द्वारा स्पष्ट कीजिए।

(ग) क्ष, त्र, ज्ञ और श्र किन-किन दो वर्णों के मेल से बने हैं?

(घ) क्ष, त्र, ज्ञ और श्र से बनने वाले दो-दो शब्द लिखिए।

(ङ) अनुस्वार (ं), अनुनासिक (ँ) या विसर्ग (:) के चिह्न का प्रयोग कर उपयुक्त शब्द बनाइए–

प्रात अतिम खासी अनत ठडा चादी

5. **निम्नलिखित शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए–**

कक्षा _____

संबंध _____

पुस्तकालय _____

प्रत्यक्ष _____

श्रीमती _____

पंचतंत्र _____

पृष्ठ _____

पुस्तक _____

6. **निम्नलिखित वर्णों के संयोग से शब्द बनाइए–**

व् + इ + श् + र् + आ + म् + अ _____

व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ _____

म + इ + त् + र् + अ + त् + आ _____

7. **संयुक्ताक्षरों से बने दस शब्द लिखिए–**

_____ _____ _____ _____ _____

_____ _____ _____ _____ _____

रचनात्मक क्रियाकलाप

1. अनुस्वार का प्रयोग वर्ग के पंचमाक्षर के स्थान पर किया जाता है।
हिंदी के पाँच वर्गों के पंचमाक्षर हैं– ङ् ञ् ण् न् म्।
उदाहरण देखकर चार-चार शब्द बनाइए–

कवर्ग	पङ्कज	–	पंकज	_____	_____	_____	_____
चवर्ग	चञ्चल	–	चंचल	_____	_____	_____	_____
टवर्ग	झण्डा	–	झंडा	_____	_____	_____	_____
तवर्ग	बन्दर	–	बंदर	_____	_____	_____	_____
पवर्ग	खम्भा	–	खंभा	_____	_____	_____	_____

2. बहुत-से शब्द उलटे और सीधे दोनों प्रकार से पढ़े जाने पर वही रहते हैं। जैसे 'कनक' 'मलयालम'। आप भी अपने साथियों के साथ मिलकर इस प्रकार के शब्द खोजिए और उनकी सूची बनाइए।

Scanned with CamScanner

3 संधि
Joining

संधि

संधि का सामान्य अर्थ है– **मेल**। व्याकरण में दो वर्णों के पास-पास होने पर उनके मेल से जो परिवर्तन या विकार उत्पन्न होता है, उसे संधि कहा जाता है। संधि से एक नए शब्द की रचना होती है; जैसे–

महा + ऋषि = महर्षि

विद्या + अर्थी = विद्यार्थी

नर + ईश = नरेश

उपर्युक्त उदाहरणों में पहले शब्द के अंतिम वर्ण तथा दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण के मेल से परिवर्तन आ गया है। यही परिवर्तन संधि है।

दो वर्णों के मेल से होने वाले विकार (परिवर्तन) को **संधि** कहते हैं।

संधि-विच्छेद

जब शब्दों के वर्णों को अलग करके दर्शाया जाता है (उन्हें पहले वाली स्थिति में रख दिया जाता है) तो इस प्रक्रिया को **संधि-विच्छेद** कहते हैं; जैसे– 'महेश' शब्द का संधि-विच्छेद 'महा + ईश' होगा।

संधि के भेद

संधि के मुख्य रूप से तीन भेद होते हैं–

1. स्वर संधि
2. व्यंजन संधि
3. विसर्ग संधि

स्वर संधि : स्वर का स्वर के साथ मेल होने पर ध्वनि में जो परिवर्तन आता है, उसे **स्वर संधि** कहते हैं। इसके पाँच भेद हैं–

(क) दीर्घ संधि : दीर्घ का अर्थ होता है– **'बड़ा'**। दीर्घजीवी अर्थात जो देर तक जीवित रहे। जिसे बोलने में अधिक ऊर्जा की जरूरत पड़े। स्वर दो तरह के होते हैं– ह्रस्व स्वर और दीर्घ स्वर। जब एक ही जाति के दो स्वर मिलते हैं, तो उसी जाति का दीर्घ स्वर बन जाता है; जैसे–

शब्द + अर्थ = अ + अ = आ = **शब्दार्थ**

स्व + अर्थ = अ + अ = आ = **स्वार्थ**

नीचे दीर्घ संधि के उदाहरण देखिए और समझिए–

अ + अ = आ

मत + अनुसार = मतानुसार

सह + अनुभूति = सहानुभूति

Scanned with CamScanner

देह	+	अंत	=	देहांत	निम्न	+	अंकित	=	निम्नांकित
सार	+	अंश	=	सारांश	भाव	+	अर्थ	=	भावार्थ
प्राण	+	अंत	=	प्राणांत	क्रोध	+	अग्नि	=	क्रोधाग्नि

आ + आ = आ | **आ + अ = आ**

दया	+	आनंद	=	दयानंद	सहायता	+	अर्थ	=	सहायतार्थ
महा	+	आत्मा	=	महात्मा	सीमा	+	अंत	=	सीमांत
विद्या	+	आलय	=	विद्यालय	रेखा	+	अंश	=	रेखांश

इ + इ = ई | **इ + ई = ई**

हरि	+	इच्छा	=	हरीच्छा	मुनि	+	ईश्वर	=	मुनीश्वर
रवि	+	इंद्र	=	रवींद्र	रवि	+	ईश	=	रवीश
मुनि	+	इंद्र	=	मुनींद्र	कपि	+	ईश	=	कपीश
गिरि	+	इंद्र	=	गिरींद्र	हरि	+	ईश	=	हरीश

ई + इ = ई | **ई + ई = ई**

लक्ष्मी	+	इच्छा	=	लक्ष्मीच्छा	अधि	+	ईश्वर	=	अधीश्वर
नारी	+	इंदु	=	नारींदु	नारी	+	ईश्वर	=	नारीश्वर
शची	+	इंद्र	=	शचींद्र	रजनी	+	ईश	=	रजनीश
कवि	+	इंद्र	=	कवींद्र	सती	+	ईश	=	सतीश

उ + उ = ऊ | **उ + ऊ = ऊ**

लघु	+	उत्तर	=	लघूत्तर	साधु	+	ऊर्जा	=	साधूर्जा
सु	+	उक्ति	=	सूक्ति	लघु	+	ऊर्मि	=	लघूर्मि

ऊ + उ = ऊ | **ऊ + ऊ = ऊ**

वधू	+	उल्लेख	=	वधूल्लेख	भू	+	ऊर्जा	=	भूर्जा
वधू	+	उत्सव	=	वधूत्सव	वधू	+	ऊर्जा	=	वधूर्जा

(ख) गुण संधि : जब **अ/आ**, में **इ/ई**, **उ/ऊ** या **ऋ** मिलते हैं, तो इस मेल से क्रमशः **'ए'**, **'ओ'**, **'अर्'** बन जाते हैं। यह मेल **गुण संधि** कहलाता है।

अ + इ/ई = ए

भारत	+	इंदु	=	भारतेंदु	नर	+	ईश	=	नरेश
स्व	+	इच्छा	=	स्वेच्छा	सुर	+	ईश	=	सुरेश

आ + इ/ई = ए

राजा	+	इंद्र	=	राजेंद्र	राजा	+	ईश्वर	=	राजेश्वर
महा	+	इंद्र	=	महेंद्र	लंका	+	ईश	=	लंकेश

अ/आ + उ/ऊ = ओ

सूर्य	+	ऊष्मा	=	सूर्योष्मा	महा	+	उत्सव	=	महोत्सव

Scanned with CamScanner

वीर	+	उचित	=	वीरोचित	लंबा	+	उदर	=	लंबोदर
गंगा	+	उदक	=	गंगोदक	जल	+	ऊर्मि	=	जलोर्मि

अ/आ + ऋ = अर्

देव	+	ऋषि	=	देवर्षि	महा	+	ऋषि	=	महर्षि
सप्त	+	ऋषि	=	सप्तर्षि	ब्रह्म	+	ऋषि	=	ब्रह्मर्षि

(ग) वृद्धि संधि : जब पहले शब्द के अंतिम **'अ'** या **'आ'** में दूसरे शब्द के **'ए'** या **'ऐ'** मिलते हैं, तो **'ऐ'** हो जाता है। इसी तरह **'अ'** या **'आ'** में जब **'ओ'** या **'औ'** मिलते हैं, तो **'औ'** हो जाता है।

अ	+	ए	=	ऐ	एक	+	एक	=	एकैक
अ	+	ऐ	=	ऐ	परम	+	ऐश्वर्य	=	परमैश्वर्य
आ	+	ए	=	ऐ	सदा	+	एव	=	सदैव
आ	+	ऐ	=	ऐ	राजा	+	ऐश्वर्य	=	राजैश्वर्य

अ/आ + ओ/औ मिलाने पर = औ

दंत	+	ओष्ठ	=	दंतौष्ठ	महा	+	ओजस्वी	=	महौजस्वी
वन	+	औषध	=	वनौषध	महा	+	औदार्य	=	महौदार्य
महा	+	औषध	=	महौषध	परम	+	ओज	=	परमौज

(घ) यण संधि : यदि पहले शब्द के अंत में **इ/ई, उ/ऊ** या **ऋ** हो और दूसरे शब्द के आरंभ में कोई **भिन्न स्वर** हो, तो **इ/ई** का **य्, उ/ऊ** का **व्** तथा **ऋ** का **र्** हो जाता है। यही **यण संधि** कहलाती है।

इ + अ/आ = य

अति	+	अधिक	=	अत्यधिक
अति	+	अंत	=	अत्यंत
इति	+	आदि	=	इत्यादि
परि	+	आवरण	=	पर्यावरण

इ + उ = य

उपरि	+	उक्त	=	उपर्युक्त
प्रति	+	उत्तर	=	प्रत्युत्तर

उ + आ = व

सु	+	आगत	=	स्वागत

उ + ए = वे

अनु	+	एषण	=	अन्वेषण

उ + इ = वि

अनु	+	इति	=	अन्विती

इ + ए = ये

अधि	+	एता	=	अध्येता
प्रति	+	एक	=	प्रत्येक

ई + अ = य

देवी	+	अर्पण	=	देव्यर्पण

ई + आ = या

देवी	+	आलय	=	देवालय

उ + अ = व

सु	+	अच्छ	=	स्वच्छ

ऊ + आ = वा

वधू	+	आगमन	=	वध्वागमन

Scanned with CamScanner

(ङ) अयादि संधि : **ए/ऐ** के बाद कोई **भिन्न स्वर** आने पर क्रमशः **अय्/आय** जाता है। **ओ/औ** के बाद **भिन्न स्वर** आने पर क्रमशः **अव्/आव्** हो जाता है। जैसे–

ने + अन	=	नयन	चे + अन	=	चयन
गै + अक	=	गायक	गै + इका	=	गायिका
भो + अन	=	भवन	पो + अन	=	पवन
पौ + अक	=	पावक	पौ + इत्र	=	पवित्र
भौ + अक	=	भावुक (यहाँ 'उ' की मात्रा भी साथ लगती है)।			

व्यंजन संधि

व्यंजन का व्यंजन अथवा स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है, उसे **व्यंजन संधि** कहते हैं। यह तीन प्रकार से होती है–

1. व्यंजन का स्वर से मेल; जैसे–
   वाक् + ईश = वागीश ('क्' व्यंजन + 'ई' स्वर)।
2. स्वर का व्यंजन से मेल; जैसे–
   परि + नाम = परिणाम ('इ' स्वर + 'न' व्यंजन)
3. व्यंजन का व्यंजन से मेल; जैसे–
   उत् + चारण = उच्चारण ('त्' व्यंजन + 'च' व्यंजन)

विसर्ग संधि

विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में जो विकार उत्पन्न होता है, उसे **विसर्ग संधि** कहते हैं; जैसे– दुः + बल = दुर्बल, मनः + बल = मनोबल।

विसर्ग संधि के मुख्य नियम तथा उदाहरण नीचे दिए गए हैं–

1. विसर्ग (:) का 'ओ' होना : विसर्ग के पूर्व यदि **'अ'** और बाद में भी **'अ'** अथवा किसी वर्ग के **तीसरे, चौथे**, पाँचवें वर्ण (**ग, घ, ङ; ज, झ, ञ; ड, ढ, ण; द, ध, न; ब, भ, म**) तथा **य, र, ल, व** हो, तो विसर्ग का **'ओ'** हो जाता है; जैसे–

मनः + अनुकूल	=	मनोनुकूल	अधः + गति	=	अधोगति
मनः + बल	=	मनोबल	वयः + वृद्ध	=	वयोवृद्ध
तपः + बल	=	तपोबल	मनः + रथ	=	मनोरथ
मनः + विज्ञान	=	मनोविज्ञान	पयः + धर	=	पयोधर

2. विसर्ग का 'र्' होना : विसर्ग के पहले **अ/आ** को छोड़कर अन्य स्वर हो और विसर्ग का मेल किसी स्वर के साथ या किसी भी वर्ग के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण (**ग, घ, ङ; ज, झ, ञ; ड, ढ, ण; द, ध, न; ब, भ, म**) के साथ या **य, र, ल, व, ह** के साथ हो, तो विसर्ग **'र्'** के रूप में परिवर्तित हो जाता है; जैसे–

निः + आकार	=	निराकार	निः + आहार	=	निराहार

Scanned with CamScanner

दुः	+	आशा	=	दुराशा		निः	+	धन	=	निर्धन	
दुः	+	बल	=	दुर्बल		दुः	+	जन	=	दुर्जन	
निः	+	जन	=	निर्जन		पुनः	+	जन्म	=	पुनर्जन्म	

3. **विसर्ग का 'श्' होना :** विसर्ग से **पूर्व कोई स्वर** हो और **बाद** में **च, छ** या **श** हो, तो विसर्ग का **'श्'** हो जाता है; जैसे–

दुः	+	शासन	=	दुश्शासन		निः	+	चल	=	निश्चल	
दुः	+	चरित्र	=	दुश्चरित्र		निः	+	चिंत	=	निश्चिंत	

4. **विसर्ग का 'स' होना :** विसर्ग के **बाद** यदि **त** या **स** हो तो विसर्ग का **'स्'** हो जाता है; जैसे–

निः	+	संतान	=	निस्संतान		नमः	+	ते	=	नमस्ते	
निः	+	तेज	=	निस्तेज		दुः	+	साहस	=	दुस्साहस	

5. **विसर्ग का 'ष्' होना :** यदि विसर्ग के **पूर्व इ/उ** और बाद में **क, ख, ट, ठ, प, फ** में से कोई वर्ण हो, तो विसर्ग का **'ष्'** हो जाता है; जैसे–

निः	+	फल	=	निष्फल		निः	+	कलंक	=	निष्कलंक	

6. **विसर्ग का लोप होना :** यदि विसर्ग के पूर्व अ या आ हो और बाद में कोई भिन्न स्वर हो, तो विसर्ग का लोप हो जाता है; जैसे–

अतः	+	एव	=	अतएव

7. **विसर्ग का लोप तथा पूर्व स्वर दीर्घ होना :** विसर्ग के **बाद 'र'** हो, तो **विसर्ग लुप्त** हो जाता है और उसका **पूर्व स्वर दीर्घ** हो जाता है; जैसे–

निः	+	रस	=	नीरस		निः	+	रोग	=	नीरोग	
निः	+	रव	=	नीरव							

8. **विसर्ग का ज्यों-का-त्यों रहना :**

प्रातः	+	काल	=	प्रातःकाल		अंतः	+	करण	=	अंतःकरण	

हमने जाना

1. दो वर्णों के मेल से होने वाले विकार (परिवर्तन) को संधि कहते हैं।
2. संधि तीन प्रकार की होती है– स्वर संधि, व्यंजन संधि और विसर्ग संधि।
3. स्वर संधि के पाँच उपभेद होते हैं– दीर्घ संधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, यण संधि और अयादि संधि। व्यंजन और विसर्ग संधि भी कई प्रकार की होती है।
4. विसर्ग संधि में भी विसर्ग से आगे वाले व्यंजन के अनुसार विकार होते हैं।

Scanned with CamScanner

अभ्यास

मौखिक प्रश्न

1. दिए गए प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) संधि कितने प्रकार की होती है? नाम बताइए।

(ख) स्वर संधि के कितने उपभेद होते हैं?

(ग) विसर्ग संधि किसे कहते हैं?

लिखित प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. सही संधि-विच्छेद के सामने (✓) का चिह्न लगाइए–

महोर्मि	–	महा + उर्मि ○	महा + ऊर्मि ○	महा + ऊर्मी ○	मह + ऊर्मि ○
सतीश	–	सत + ईश ○	सति + ईश ○	सती + इश ○	सती + ईश ○
दयानंद	–	दया + आनंद ○	दया + अनंद ○	दय + आनंद ○	दया + नंद ○
नाविक	–	नौ + ईक ○	नौ + इक ○	नौ + इका ○	ना + विक ○
गायक	–	गा + यक ○	गे + अक ○	गा + आक ○	गै + अक ○
जगदीश	–	जग + दीश ○	जगत् + ईश ○	जगद + ईश ○	जगत + ईश ○

2. सही संधि-विच्छेद के सामने (✓) का चिह्न लगाइए–

भी	+	मार्जुन	=	भीमार्जुन ○		महा	+	शय	=	महाशय ○
पो	+	अन	=	पवन ○		विद्या	+	आलय	=	विद्यालय ○
अति	+	अधिक	=	अत्यधिक ○		महान	+	आत्मा	=	महात्मा ○

3. निम्नलिखित में संधि करके संधि का भेद लिखिए–

संधि-विच्छेद				संधि	संधि का नाम
राज	+	इंद्र	=	_____	_____
इति	+	आदि	=	_____	_____
अनु	+	इति	=	_____	_____
यथा	+	इष्ट	=	_____	_____
गिरि	+	ईश	=	_____	_____
पित्र	+	अनुमति	=	_____	_____
ने	+	अन	=	_____	_____
राजा	+	इंद्र	=	_____	_____

4. निम्नलिखित का संधि-विच्छेद कीजिए–

शब्द	संधि-विच्छेद	शब्द	संधि-विच्छेद
निश्चय	_____ + _____	यथेष्ठ	_____ + _____
नायक	_____ + _____	लोकेश	_____ + _____
भवन	_____ + _____	नमस्ते	_____ + _____
परोपकार	_____ + _____	देवर्षि	_____ + _____
परमेश्वर	_____ + _____	भानूदय	_____ + _____

Scanned with CamScanner

5. निम्नलिखित वर्णों के मेल से दो-दो शब्द बनाइए–

					परमार्थ	धर्मार्थ
अ	+	अ	=	आ		
अ	+	आ	=	आ		
आ	+	आ	=	आ		
इ	+	इ	=	ई		
इ	+	ई	=	ई		
ई	+	ई	=	ई		
उ	+	ऊ	=	ऊ		
ऊ	+	ऊ	=	ऊ		
आ	+	ई	=	ए		
अ	+	ए	=	ऐ		

6. विसर्ग संधि किसे कहते हैं? दो उदाहरण लिखिए।

7. संधि के कितने भेद होते हैं? प्रत्येक के तीन-तीन उदाहरण दीजिए।
   (क)
   (ख)
   (ग)

8. संधि तथा संधि-विच्छेद में क्या अंतर है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

रचनात्मक क्रियाकलाप

1. अपनी हिंदी पाठ्यपुस्तक से दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण और अयादि संधि के पाँच-पाँच उदाहरण खोजकर लिखिए–

दीर्घ	गुण	वृद्धि	यण	अयादि
भाव + अर्थ				

2. शिक्षक-शिक्षिका के निर्देशन में अपने पाँच सहपाठियों के साथ मिलकर एक संधि-विच्छेद प्रतियोगिता आयोजित कीजिए। संधियुक्त शब्दों की कुछ पर्चियाँ बनाइए, उन्हें एक टोकरी में डालिए फिर बारी-बारी से प्रत्येक छात्र एक पर्ची उठाएगा। उस पर्ची में जो शब्द होगा, शीघ्रता से उसका संधि-विच्छेद बोलना होगा। जो सर्वाधिक अंक हासिल करेगा, वह जीनियस कहलाएगा।

Scanned with CamScanner